

*Kopfe trägt man den Samen (auf's Feld)* ÇAT. BR. 3,3,17. TS. 6,1,9, 4. KĀṬU. 24,6. — शीर्षणि BṛĀG. P. 5,25,2. ऋड्रःकण्ठशीर्षणि 4,23, 14. शीर्षि 5,18,23. 10,88,35. शीर्षणि MBH. 13,2411. BṛĀG. P. 6,9,4. शीर्षिभिः 9,16,17. Am Ende eines adj. comp.: सै° TS. 5,5,4,3. सप्तै° (f. °शीर्षि) RV. 3,5,5. धी 10,67,1. अर्क VĀLAKH. 3,4. शर्ते° ÇAT. BR. 9,1, 4,6,7. 2,2,32. सर्हन् RV. 10,90,1. SHADY. BR. (nom. °शीर्षा: falsch). MBH. 3,15815. BṛĀG. P. 2,1,28. शीर्षा° 3,18,5. दग्ध° 4,7,3. अवनत° 5,3,4. विवृक्णा° 9,19. — Vgl. अ°, अय°, त्रि°, पञ्च°, ब्रह्म°, मृग°, रुरु°, वि°, शतैक°, कपिशिर्षि.

शीर्षपट्टक m. *Kopfbinde* KATHĀS. 13,190.

शीर्षपर्णी s. शीर्षपर्णी.

शीर्षबन्धना f. *Kopfbinde* MBH. 8,1489.

शीर्षभार m. *Kopflast* gaṇa भस्त्रादि zu P. 4,4,16. — Vgl. शीर्षभार.

शीर्षभारिक adj. (f. ई) *eine Kopflast tragend* ebend. — Vgl. शीर्षभारिक.

शीर्षभिन्ध n. *das Kopfspalten* AV. 10,5,50.

शीर्षमाय m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* gaṇa य-स्कादि zu P. 2,4,63.

शीर्षरत्न n. *Helm* HĀR. 73.

शीर्षरत्ना n. dass. H. an. 3,509.

शीर्षरोगिन् adj. *Kopffweh bewirkend* MBH. 5,789 = 1327 (vgl. 2,2138).

शीर्षवत् (von शीर्ष oder शीर्षन्) adj. *ein Haupt habend*: सहस्रानन° so v. a. सहस्राननवत् und सहस्रशीर्षवत् BṛĀG. P. 2,5,35.

शीर्षविरेचन n. = शिरोविरेचन KĀRAKA 1,2.

शीर्षव्यथा f. *Kopffweh* RĀGĀ-TAR. 4,14.

शीर्षवैकै m. *Kopfleiden* AV. 19,39,10.

शीर्षकृर्ष्य adj. *was sich auf dem Kopfe tragen lässt* (Gegens. अनेवाक्य) TS. 6,1,9,4. KĀṬU. 24,6.

शीर्षान्त (शीर्ष + अन्त) *Nähe des Kopfes*: शीर्षान्ते so v. a. *unter dem Kopfkissen* KATHĀS. 3,22. शीर्षान्तात् 42,65.

शीर्षामयै (शीर्ष oder शीर्षन् + आ°) m. *Kopfleiden* AV. 5,4,10. 9,8,1.

शीर्षायणा m. patron.; pl. *Pravarādhj.* in Verz. d. B. H. 59,12. wohl fehlerhaft für शीर्षायणा.

शीर्षावशेषीकर (शीर्ष - अवशेष + 1. कर्) von Jmd nur den Kopf übrig lassen: दानवपति: °कृत: so v. a. राङ्ग: Spr. 3159.

शीर्षि in Ableitungen von Zusammensetzungen auf शिरस्: z. B. in कृस्तिशीर्षि von कृस्तिशिरस् P. 6,1,62, Schol.

शीर्षिक s. अ°.

शीर्षभार (शीर्ष loc. von शीर्ष + भार) m. = शीर्षभार gaṇa भस्त्रादि zu P. 4,4,16.

शीर्षभारिक adj. (f. ई) = शीर्षभारिक ebend.

शीर्षादय (शीर्ष + उ°) adj. *mit dem Kopfe aufgehend*; so heissen in der Horoskopie die Zwillinge, der Löwe, die Jungfrau, die Wage, der Scorpion und der Wassermann VARĀH. BRH. 1,10.

1. शील: शीलति DHĀTUP. 15,16 (समाधि). शील्य s. bes.

2. शील m. N. pr. eines Mannes Inschr. im Journ. of the Am. Or. S. 6,544,6.

1. शील UNĀDIS. 4,38 (oxyt.) m. (dieses nicht zu belegen) und n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. SIDDH. K. 250,5,8. am Ende eines adj. comp. f.

आ. 1) *Gewohnheit, angeborene oder anerzogene Art und Weise zu sein, Charakter* AK. 3,4,1,13. 26,203. H. 844. 1377. an. 2,513. MED. I. 52. HALĀJ. 2,241. 5,43. VS. 30,14. तत्परुक्पस्य शीलम् NIR. 10,42. पित्र्यं वा भवति शीलं मातुर्वेभ्यमेव वा M. 10,59. संश्रयत्येव तच्छीलं नरोऽल्प-मपि वा बहु 60. स्मृतिशीले 2,6. श्रुतशीले 11,22. JĀGŪ. 3,44. कामारि-काणां शीलेन वक्ष्याम्यहम् MBH. 1,4054. तुल्यशीलवयोयुक्ता 3,2677. 13. 6626. शरीरशीलयोऽस्य प्रकृतेर्विकृतिर्भवेत् SUÇR. 1,112,12. मनुज्ञाकृति-शीलयुक्त VARĀH. BRH. 24,2. अज्ञातकुल° adj. Spr. (II) 106. fg. 3532. एकोदरसमुद्भूता: — न भवति समा: शीले 1423. मम शीलं विज्ञासु: KATHĀS. 21,93. BṛĀG. P. 3,7,29. यास्ते शीलमनुव्रता: 14,13. पच्छीलमनुवर्तिनुम् 45. सारत: कर्मत: शीलत: DAÇAK. 70,13. MĀRK. P. 69,31. सम° adj. MBH. 13,6754. BṛĀG. P. 1,2,27. तुल्य° adj. 9,4,29. समान° adj. 3,21,15. RĀGĀ-TAR. 1,307. सच्छील VARĀH. BRH. 24,2. कल्याण° adj. MBH. 13, 518. मृड° adj. R. 2,38,9. अनुद° adj. 14. शुद्ध° adj. ÇĀK. 180. अनर्घ्य° adj. RAGH. 5,2. सत्य° adj. R. 2,54,36. असत्य° adj. Spr. (II) 751. स्पृ-हणीय° adj. BṛĀG. P. 3,15,25. भगवत्प्रतिकूल° adj. 30. Ueberaus häu-fig in comp. mit dem, was Einem zur *Gewohnheit* geworden ist, wozu man eine besondere Neigung oder Fähigkeit besitzt P. 3,2,1, VĀRTI. 6 (mit dem ursprünglichen Tone des ersten Wortes). स्नानशीलादिगु-णभूषित RĀGĀ-TAR. 5,469. meistens am Ende eines adj. comp.: सतसत्य° ĀÇV. ÇR. 2,1,5. अघ°, अत° *Läufer, Spieler* ĀPAST. 2,16,13. क्रोध° Spr. (II) 3315. VARĀH. BRH. S. 46,76. तमा° MBH. 11,371. PAÑKĀR. 2,3, 29. SARVADARÇANAS. 44,4. विप्रसारण° SUÇR. 1,115,16. नियुद्ध° MBH. 4, 240. गायनाढ्यान° 2364. स्तुति° R. 2,65,2. तैत्तिषेया° KĀM. NĪRIS. 8,6. नियमव्रत° R. GORR. 2,28,28. परिक्षा° VARĀH. BRH. S. 69,34. कृाम° KATHĀS. 114,65. fg. माया° Spr. (II) 4835. विकार° R. 7,11,42. स्वप्न° VARĀH. BRH. S. 78,17. 94,12. अतिस्वप्न° BHAG. 6,16. अमिवादन° Spr. (II) 504. अतिसंचय° 1531. 3639. (I) 5035. R. 5,19,22. 6,8,4. GĪR. 6,5. JOÇAS. 2,18. BṛĀG. P. 3,5,3. 4,13,4. 30,16. 5,20,31. HIT. 10,21. अगुणा° *der keine Vorzüge besitzt oder der kein Verständniss für dieselben hat* Spr. (II) 2149. — 2) *Natur, Wesen* überh.: स्वप्नशीलश्च R. 2,63,13. — 3) *gute Gewohnheiten, — Sitten, Ehrenhaftigkeit, ein edler Charakter* AK. 1,1,2,26. 3,4,26. 203. H. an. MED. ब्रह्मण्याता देवपितृभक्तता सौम्यता अयोपतापिता अनसूयता मृडता अघारूप्यं मैत्रता प्रियवादिनं कृतज्ञता श्रण्याता कारुण्यं प्रशान्तिश्चेति त्रयोदशविधं शीलम् HĀLĪTA bei KULL. zu M. 2,6. fünf bei den Buddhisten Köppen 1,444. 446. °पारमिता Lot. de la b. I. 547. श्रिया शीलेन रूपेण व्रतेन च दमेन च MBH. 3,1806. R. 1,6,13. 2,33,12. 5,57,2. Spr. 2525. 2992. 4611. fgg. 5309. (II) 1006. 1735. 2351. v. I. 2780. 3221. v. I. 3389. 3825. 5247. KATHĀS. 16,113. 20,117. °ज्ञ 58,65. MĀRK. P. 20,24. RĀGĀ-TAR. 1,245. 6,12. कुलशीला-दिक्म् PRAB. 22,10. fg. BṛĀG. P. 2,7,46. 9,40. 4,12,46. अखिललोकावह-भतमं शीलम् Spr. 2765. शीलं प्रधानं पुरुषे 2993. °तुल्यं न मण्डनम् (II) 292. शीलं हि विदुषां धनम् KATHĀS. 5,98. °निधि MBH. 3,2992. BṛĀG. P. 4,13,21. °ज्ञाननिधि MBH. 1,5358. °वृद्ध 3,16677. संपन्ना चैव शीलत: M. 9,82. °संपन्न MBH. 1,6135. Spr. (II) 2284. 4116. TATTVAS. 49. BṛĀG. P. 4,12,12. GOBH. 2,4,6. KAUC. 67. ĀÇV. GRHJ. 1,5,3. 4,7,2. शीलपसंपन्न Spr. 3115. MBH. 3,2426. कुलशीलसमन्वित 2753. 2790. प्रतिलब्ध° adj. BṛĀG. P. 3,16,7. साधोनां तु स्थितानां तु शीले सत्ये श्रुते